अध्याय – 18

विदेशों से सहायता प्राप्त परियोजानायें

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् में वर्ष के दौरान विदेशों से सहायता प्राप्त परियोजनाओं के अन्तर्गत की गई गतिविधियां इस प्रकार हैं:

परियोजना 1: यू०एन०डी०पी०, भा०वा०अ०शि०पं० परियोजना - भा०वा०अ०शि०पं० को सशक्त और विकसित करना।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् को सशक्त और विकसित करने के लिए यू०एन०डी०पी०, भा०वा०अ०शि०प० परियोजना 04.09.1992 को शुरू हुई, जिसमें यू०एन०डी०पी० की सहायता यू०एस डालर 2.56 मिलियन और भारतीय सहायता रू० 21.94 मिलियन की है। यह एक पंचवर्षीय परियोजना है जिसका उद्देश्य भारत में ग्रामीण विकास के लिए वानिकी के योगदान को बढ़ाकर निर्धनता में कमी लाना है। भा०वा०अ०शि०प० संस्थानों तथा इसके कार्मिकों की सामर्थ्य और योग्यता को सशक्त बनाने के लिए यह परियोजना अभिकल्पित की गई ताकि वे वानिकी अनुसंधान करके उसका विस्तार कर सकें। परियोजना को विस्तारित किया गया है तथा इसे मार्च, 1999 तक पूरा किया जाना है।

परियोजना के मुख्य उद्देश्य

- वन उत्पादकता बढ़ाने एवं वनीकरण को प्रोत्साहित करने निम्नीकृत वनों एवं ग्राम परती के सुधार एवं पुनर्वनीकरण; तथा कृषि भूमियों में कृषि वानिकी के लिए एक ठोस अनुसंधान आधार की स्थापना करना।
- उपयोगकर्ताओं में परीक्षित प्रौद्योगिकियों एवं प्रमाणित अनुसंधान परिणामों के हस्तान्तरण के लिए विस्तार प्रक्रियाओं को विकास करना।
- कुशल वैज्ञानिकों तथा तकनीशियनों के कई सुगठित एवं बहु विद्या विशेष क्षेत्र के दलों के प्रयासों को संघटित करने के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान क्षमताओं का उच्चीकरण करना।

लाभभोगी

अन्तिम लाभभोगी किसान, गरीब जनजातियां, आर्थिक रूप से पिछड़ा वर्ग तथा काष्ठ आधारित उद्योग भी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधानकर्ताओं के साथ आपसी कार्यो का अनुभव तथा वन आनुवंशिकी, वीज प्रौद्योगिकी, सदाहरित वनों, पर्णपाती वनों, शुष्क क्षेत्र वानिकी, अनुसंधान कार्य पद्धति तथा वृक्ष दैहिकी पर पाठ्यक्रमों द्वारा

अनुसंधान में हुई प्रगति की जानकारी रखने वाले वानिकी अनुसंधानकर्ता वानिकी अनुसंधान के लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए अपने द्वारा हाल में अर्जित प्रवीणता का उपयोग कर रहे हैं।

परियोजना की मुख्य-मुख्य बातें

वर्ष 1997-98 के दौरान परियोजना की मुख्य उपलब्धियां नीचे दिए अनुसार हैं:

1. अन्तर्राष्ट्रीय परामर्श

परियोजना के त्रिपक्षीय मध्यावधि पुनरीक्षण ने संस्तुति दी कि निर्धनता में कमी लाने तथा पर्यावरण निम्नीकरण की दोहरी समस्या का सामना करने हेतु ग्राहय अनुसंधान द्वारा प्रौद्योगिकी विकास एवं इसके हस्तान्तरण सहित विस्तार सहानुबन्धों को विकसित करने तथा अब तक किए गए अनुसंधान के परिणामों को समेकित करने के लिए वर्तमान परियोजना एक अनुवर्ती पहलू होनी चाहिए। तदनुसार अनुवर्ती परियोजना तैयार करने के लिए अमरीकी डालर 120,000 के अनुदान हेतु डॉ० हालुक हिल्मी, एक अन्तर्राष्ट्रीय परामर्शदाता द्वारा एस.एस.पी.डी. दस्तावेज तैयार किया गया।

2. राष्ट्रीय परामर्श एवं उप-अनुबन्ध देना

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम परियोजना विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय परामर्शदाताओं की नियुक्ति और उप-अनुबंध करती हैं। वर्ष के दौरान उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के अनुसंधान पुनरीक्षण एवं समेकन पर राष्ट्रीय परामर्श पूरा किया गया। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के लिए अनुसंधान पुनरीक्षण एवं समेकन का कार्य प्रगति पर है। वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के अनुसंधान पुनरीक्षण एवं समेकन के लिए परामर्शी सेवा दी गई, जो प्रगति पर है।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून तथा हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के लिए "फार्म भूमियों पर उगे वृक्षों की अर्थव्यवस्था"; काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान तथा वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान के अधिकार - क्षेत्र के अन्तर्गत क्षेत्रों में सामाजिक वानिकी उत्पादों के माँग - आपूर्ति अध्ययनों; और इन्ही संस्थानों की सीमा के अन्तर्गत इलाकों में वनों के पुनर्जनन एवं सुरक्षा के साथ लोगों को जोड़ने के लिए सामाजिक - आर्थिक अध्ययनों पर उप - अनुबन्धों को पूरा किया गया। वर्ष के दौरान निम्न उप-अनुबन्ध दिए गए:-

(i) वनों के पुनर्जनन एवं सुरक्षा के साथ लोगों को जोड़ने के लिए सामाजिक - आर्थिक अध्ययन । उष्णकटिबन्धीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर से सम्बन्धित क्षेत्रों के लिए मैसर्स हिमालयन ग्रामीण संसाधन विकास सोसाइटी, देहरादून को दिया गया।

(ii) सामाजिक वानिकी उत्पादों की माँग एवं आपूर्ति अध्ययन - कार्य प्रगति पर है।

(iii) फार्म भूमि पर उगे वृक्षों की अर्थव्यवस्था का प्रलेख - पोषण - सीकॉम प्रोजेक्ट कनसल्टेन्ट, नई दिल्ली तथा ट्री लैण्ड डवलपमेंट सर्विसेज, बंगलौर को दिया गया। ट्री लैण्ड डवलपमेंट सर्विसेज, बंगलौर ने रिपोर्ट पूरी कर ली है तथा सीकॉम प्रोजेक्ट कनसल्टटेन्ट, नई दिल्ली ने मसौदा रिपोर्ट दी है, जिनकी जांच की जा रही है।

यू०न०डी०पी० - भा०वा०अ०शि०प० परियोजना कार्यकलापों पर फिल्म: परियोजना उपलब्धियों एवं प्राप्त लाभों को दर्शाते हुए यू०न०डी०पी० /भा०वा०अ०शि०पं० परियोजना कार्यकलापों पर एक टी वी फिल्म निर्माण का कार्य मैसर्स सरल शील कम्यूनिकेशन, नई दिल्ली को दिया गया। फिल्म का निर्माण बीटाकाम पर किया जाना है। फिल्म शूटिंग का काम हो चुका है। अब अन्तिम रूप से तैयार फिल्म की प्रतीक्षा है।

3. प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण एवं प्रदर्शन

देश के 13 राज्यों में 20 जिलों में फैले 100 प्रदर्शन गाँवों में गरीबी उन्मूलन के लिए वानिकी कार्यक्रम के प्रदर्शन पर परियोजना में विचार किया गया है। कार्यक्रम की सफलता को देखते हुए परियोजना की संचालन समिति ने सुझाव दिया है कि पूर्वी और पश्चिमी हिमालयों के पारि- नाजुक क्षेत्रों में बीस और गाँवों को अपनाया जाए। तदनुसार, गढ़वाल और अरूणाचल प्रदेश में दस - दस गाँवों को अपनाया गया है। सारे देश में फैले विभिन्न वन प्ररूपों में पहचान किए गए 50,000 धन वृक्षों तथा विभिन्न बहुउद्देशीय वृक्ष प्रजातियों के 10,000 हैक्टेयर बीज उत्पादन क्षेत्रों का रखरखाव करने में भा०वा०अ०शि०प० वैज्ञानिकों एवं क्रियान्वयन करने वाली क्षेत्रीय एजेन्सियों के बीच घनिष्ठ पारस्परिक क्रिया द्वारा राज्य वन विभागों को तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराई गई। राज्य वन विभागों को, जैव-प्रौद्योगिकी की उन्नत विधियों द्वारा उत्कृष्ट रोपण पदार्थ उत्पादन तथा बीज उत्पादन क्षेत्रों से गुणवत्ता बीजों के संग्रहण में प्रदर्शनात्मक प्रशिक्षण दिया गया। वर्ष के दौरान, वी ए एम और राइजोबिया की पहचान और संरोपण में 116 वनविदों, गैर - सरकारी संगठनों तथा किसानों को प्रशिक्षण दिया गया। इसी प्रकार बीज प्रौद्योगिकी और रोपण प्रबन्धन में 978 वन विदों, गैर - सरकारी संगठनों और 1172 किसानों को प्रशिक्षित किया गया। प्रौद्योगिकी का प्रयोगशाला से क्षेत्र में हस्तान्तरण निम्न कार्यक्रमों/उपायों द्वारा प्राप्त किया गया।

बीज प्रौद्योगिकी, रोपण प्रबन्धन, बी ए एम, राइजोबिया कार्य, प्रजातियों की पसन्द, खाद, सिंचाई बारम्बारता आदि पर प्रशिक्षण पैकेज।

जैवमात्रा उत्पादकता बढ़ाने के लिए अंगीकृत 120 गाँवों में किसानों में बहुउद्देशीय वृक्षों के 4.5 लाख आनुवंशिक रूप से उत्कृष्ट गुणवत्ता पौधों का वितरण।

प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों तथा किसान मेलों के दौरान हिन्दी, अंग्रेजी और स्थानीय भाषाओं में ब्राशुअर्स, पुस्तिकाओं, पम्फलेटों, परचों के वितरण।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून में अप्रैल, 1997 में "प्राकृतिक वनों के संरक्षण में वानिकी अनुसंधान" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में व्यापक रोपण करने, उपयुक्त कृषि वानिकी मॉडलों को विकसित करने, प्रभावी सहभागी प्रबन्धन कार्यक्रमों एवं उपयुक्त विधायी उपायों का विकास करने की रणनीतियां अपनाकर सभी स्तरों पर उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता पर विचार किया गया। कार्यशाला में भा०वा०अ०शि०प० के वनविदों एवं वैज्ञानिकों, राज्य वन विभागों, वन विकास निगमों, वानिकी विश्वविद्यालयों तथा बड़ी संख्या में गैर-सरकारी संगठनों में भाग लिया। अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व एफ०ए०ओ०, एफ०ओ०आर०एस०पी०ए०, आस्ट्रेलिया, फोर्ड फाउन्डेशन और ओ०डी०ए० से प्राप्त हुआ था।

परियोजना 2: भारत के विभिन्न कृषि - परिस्थितिकीय क्षेत्रों में कृषि-वानिकी मॉडलों के विकास के लिए भा०वा०अ०शि०प० - नाबार्ड परियोजना।

कृषि और फार्म वानिकी ग्रामीण विकास की कुंजी है। ये कार्यक्रम ग्रामीण समाज के लगभग हर वर्ग, चाहे वे भूमिहीन लोग हों या छोटे और सीमान्त किसान, ग्रामीण कारीगर आदि हों, को लाभ पंहुचाते हैं। कृषि वानिकी कृषि सामानों के साथ-साथ चारा और प्रकाष्ठ में ग्रामीण आत्मनिर्भरता के लिए एक सुलभ साधन हैं।

इस सन्दर्भ में कृषि वानिकी मॉडलों के प्रतिपादन का महत्व हो जाता है। इसी बात को ध्यान में रखकर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने भारत के चार कृषि - पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में कृषि वानिकी मॉडलों के विकास के लिए नाबार्ड के साथ सितम्बर, 1995 से शुरू करके एक पंच वर्षीय परियोजना को अन्तिम रूप दिया है, जिसने परियोजना के क्रियान्वयन के लिए अपनी अनुसंधान एवं विकास निधि से रू० 1.26 करोड़ का अनुदान स्वीकृत किया है। अनुदान की रकम, उपयोग प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने पर, तिमाही प्रतिपूर्ति के आधार पर उपलब्ध कराई जाएगी। चार कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में अनुसंधान के लिए नोडल संस्थान के रूप में पहचान किए गया भा०वा०अ०शि०प० संस्थान इस प्रकार हैं:

* उष्ण अर्ध-शुष्क दोमटी मृदाएं: वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ।
* उष्ण अल्पार्द्र - लाख तथा काली मृदायें उष्णकटिबन्धीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर।
* उष्ण अल्पार्द्र - कछारी मृदा: सामाजिक वानिकी एवं पारि - पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद।
* उष्ण शुष्क-मरूस्थल तथा लवणीय मृदाएं: शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर ।

कार्यकलाप

परियोजना का उद्देश्य देश के कृषि - पारिस्थितिकीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त स्थल विशेष, उपभोक्ता अनुकूल, वन संवर्धन - कृषि, वन संवर्धन - बागवानी, तथा वन संवर्धन - चरागाही मॉडलों का विकास करना है। परियोजना के अन्तर्गत निम्न कार्यकलाप हैं :

- प्रत्येक पहचान किए गए सूक्ष्म - जलसंभर के 1-3 गाँवों में, विद्यमान भूमि उपयोग प्रणाली की कमियों, दबावों तथा क्षमता का मूल्यांकन करने के लिए, कृषि-वानिकी अभिकल्प तथा नैदानिक सर्वेक्षण करना।
- चयनित जलसंभरों में विद्यमान कृषि-वानिकी प्रणाली का आर्थिक विश्लेषण करना।
- कृषि वानिकी तथा अन्य सम्बद्ध प्रणाली में अनुसंधान के लिए बहुउद्देशीय वृक्ष प्रजातियों का चयन करना।
- कृषि वानिकी रोपणों में जैव - उर्वरकों का सूत्रपात करना तथा उत्पादकता बढ़ाने में इनकी क्षमता का मूल्यांकन करना।
- विभिन्न कृषि - पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में भूमि उपयोग सुधारने के लिए मॉडलों पर प्रयोगों का अभिकल्पन करना।
- विभिन्न कृषि - पारिस्थितिकीय क्षेत्रों के अन्तर्गत चयनित जलसंभरों के लिए उचित भूमि उपयोग/प्रबन्धन योजनायें अभिकल्पित करना।
- एकीकृत जलसंभर प्रबन्धन के एक भाग के रूप में उपयुक्त वृक्ष प्रजातियों का सूत्रपात करके फसल उत्पादकता में सुधार करना।
- अनुसंधान परिणामों के आधार पर प्रदर्शन भू-खण्डों की स्थापना करना।

जलसंभर

इस परियोजना के अन्तर्गत पांच वर्ष में 16 गाँवों में 12 सूक्ष्म जलसंभरों, जिसका कुल क्षेत्रफल 6600 हैक्टेयर है, पर कार्य किया जाएगा।

कार्य प्रगति

वर्ष के दौरान किए गए कार्यों की मुख्य-मुख्य बातें निम्नानुसार हैं :

(1) जे०आर०एफ० को नियुक्ति देकर विभिन्न संस्थानों में भेजा गया।

(2) चयनित सूक्ष्म - जलसंभरों के लिए एन०आर०एस०ए० तथा ए०आई०एस०एल०यू०एस० संगठनों में उपलब्ध मानचित्रों की सहायता लेकर जल - भू-आकृतिकीय मानचित्रों, मृदा मानचित्रों, भूमि उपयोग और भू - आच्छादन मानचित्रों को तैयार किया गया।

(3) विभिन्न वृक्ष प्रजातियों एवं कृषि प्रजातियों के लिए उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं एवं माँग की पहचान करने हेतु सर्वेक्षण किए गए।

(क) परियोजना स्थलों में पौधशालायें स्थापित की गई तथा अब तक 1.50 लाख से अधिक पौधे उगाए गए (1997-98 में लगभग 50,000 पौधे उगाए गए)।

(ख) प्रत्येक सूक्ष्म जलसंभर के लिए कार्य समूह की पहचान की गई और घनिष्ठ सहानुबन्ध स्थापित करने के लिए ग्राम समितियां बनाई गई।

(ग) विद्यमान कृषि वानिकी प्रणाली और इसके आर्थिक विश्लेषण पर अभिकल्प एवं नैदानिक सर्वेक्षण, आँकड़े संग्रहण का कार्य पूरा किया गया।

(घ) जैव उर्वरक का सतत उत्पादन हो रहा है। इसे पौधशालाओं तथा साथ ही साथ क्षेत्रों में प्रयुक्त किया गया है और अध्ययन के साथ-साथ नियंत्रण किए जा रहे हैं।

(ड.) विभिन्न कृषि वानिकी मॉडलों को अभिकल्पित करके क्षेत्र में निर्धारित किया गया। विभिन्न कृषिवानिकी मॉडलों के तहत 94,000 से अधिक पौधे लगाए गए। 1997-98 के दौरान 46000 पादप उगाए गए।

(च) 1996 और 1997 के दौरान उगाए गए रोपण से ऊँचाई और घेरे जैसे विभिन्न वृद्धि पैरामीटरों पर आँकड़े अभिलिखित और विश्लेषित किए जा रहे हैं।

(छ) विभिन्न कृषि निवेश के उपयोग के संम्बध में विभिन्न दबावों एवं कर्मियों, जो उत्पादकता, मृदा उर्वरता, सूचना को प्रभावित करती हैं, का अध्ययन करने के लिए आँकड़े अभिलिखित किए गए।

(ज) किसानों के समक्ष विभिन्न प्रजातियों के रोपण के साथ ही साथ मृदा एवं नमी संरक्षण विधियों की तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।

(झ) वर्ष के दौरान कृषि वानिकी प्रशिक्षण के तहत 302 किसानों, 2 गैर सरकारी संगठनों, 22 वन अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया। किसानों में उपयोगी विस्तार सामग्री वितरित की गई।

परियोजना की निगरानी

परियोजना निदेशक, नाबार्ड परियोजना, भा०वा०अ०शि०प० स्तर पर, प्रगति की निगरानी के लिए उत्तरदायी हैं। एक परियोजना निगरानी समिति, नाबार्ड स्तर पर, परियोजना प्रगति की जाँच करती हैं और सलाह देती है। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून में सितम्बर, 1997 में परियोजना निगरानी समिति की बैठक हुई तथा नाबार्ड ने कुछ उपयोगी सुझाव दिए। यह सूचित किया गया कि परियोजना सितम्बर, 2000 तक पूरी हो जाएगी।

प्रतिपूर्तियां

नाबार्ड अनुदान, प्रतिपूर्ति आधार पर, व्यय का प्रमाणित ब्योरा प्रस्तुत करने पर उपलब्ध कराया जाता है। रू० 27.43 लाख के कुल व्यय के विपरीत अब नौ किस्तों में 22.76 लाख रूपये की प्रतिपूर्ति की गई हैं।

परियोजना 3: विश्व बैंक सहायता - प्राप्त वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार परियोजना (1997-98)

विश्व बैंक की सहायता से वानिकी अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार परियोजना 30 सितम्बर, 1994 में शुरू की गई। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, हिमाचल प्रदेश और तमिलनाडु राज्य निष्पादक एजेन्सियां हैं। परियोजना की कुल अनुमानित लागत रू० 2151.48 मिलियन है, जो 56.4 मिलियन अमेरिकी डालर के समतुल्य है। आई डी ए ऋण 47.0 मिलियन अमेरिकी डालर के बराबर है। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के तहत निम्न घटकों के साथ परियोजना अवधि पांच साल है:

अनुसंधान प्रबन्धन

भारतीय वानिकी अनुसंधान सूचना प्रणाली की स्थापना के लिए, अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय परामर्शदाता एक प्रबन्ध सूचना प्रणाली के विकास पर कार्य कर रहे हैं। वर्ष 1997-98 के दौरान वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, उष्णकटिबन्धीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर और वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर में भा०वा०अ०शि०प० संस्थानों के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही परामर्शदाताओं ने फ्रीप के तहत परियोजनाओं सहित जारी सभी परियोजनाओं के तकनीकी पुनरीक्षण का कार्य किया, जिसकी व्यवस्था विनरॉक इन्टरनेशनल ने की थी। सभी संस्थानों में वार्षिक अनुसंधान सलाहकार समूह की बैठकें हुई जिसमें चालू अनुसंधान कार्यक्रमों; राज्य वन विभागों, भा०वा०अ०शि०प० की अनुसंधान आवश्यकताओं; राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग तथा सभी राज्यों की अनुसंधान प्राथमिकता पर विचार-विमर्श किया गया।

अनुसंधान कार्यक्रम सहायता

विश्व बैंक पर्यवेक्षण मिशन (8-11 मार्च, 1998) के पुनरीक्षण के अनुसार 1994 के दौरान भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के संस्थानों में अनेकों वानिकी विद्या क्षेत्रों में शुरू की गई 31 अनुसंधान परियोजनायें सन्तोषजनक प्रगति कर रही हैं। रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम एक प्रमुख विषय है, जिसकी परियोजना में पहचान की गई है। मार्च, 1998 तक, निम्न उपलब्धियां हासिल की गई:

1. 1200 हैक्टेयर बीज उत्पादन क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया तथा 336.7 हैक्टेयर में छंटाई सक्रिया पूरी की गई।

2. 94.67 हैक्टेयर क्लोनीय बीजोद्यान स्थापित किया गया।
3. 21.86 हैक्टेयर कायिक संवर्धन उद्यान स्थापित किए गए तथा 36.07 हैक्टेयर की पहचान की गई।
4. राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों तथा निजी सेक्टर संगठनों को 224 अनुसंधान परियोजनाओं के लिए रू० 170.53 मिलियन की स्वीकृति दी गई।
5. राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र के नए पुस्तकालय भवन का निर्माण कर कब्जा लिया गया।
6. संचार लिंक तेज करने हेतु वी०एस०एन०एल० से 128 Kbps पट्टे पर लाइन ली गई।
7. ग्रे साहित्य के संग्रहण एवं प्रलेख - पोषण पर काम शुरू हो गया है। देहरादून में मुख्य परामर्शदाता के अलावा 14 राज्यों में राज्य परामर्शदाताओं की नियुक्ति कर दी गई है।
8. देहरादून में स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क (लान) स्थापित किया गया।

परियोजना में राष्ट्रीय वन सांख्यिकी के संकलन एवं विश्लेषण का समन्वयन करने के लिए परिषद् के अधीन एक "वन सांख्यिकीय इकाई" विकसित करने की व्यवस्था भी शामिल है। "फॉरेस्ट्री स्टेटिस्टिक्स इण्डिया, 1996" पर 17 राज्यों/संघ क्षेत्रों से आँकड़े एकत्र किए गए तथा शेष राज्यों/संघ क्षेत्रों से आँकड़े प्राप्त किए जा रहे हैं। भा०वा०अ०शि०प० के विभिन्न संस्थानों की 14 अनुसंधान परियोजनाओं के लिए जीव सांख्यिकीय सहायता दी गई। राष्ट्रीय वानिकी डाटाबेस प्रबन्ध प्रणाली विकसित करने के लिए मैसर्स सी एम सी लिमिटेड को परामर्शदाता चुना गया। परामर्शदाताओं ने प्रणाली आवश्यकता अध्ययन (एस आर एस) पर मसौदा प्रस्तुत किया है, जिसकी जांच की जा रही है।

वानिकी शिक्षा

इसमें सम विश्वविद्यालय, देहरादून के विकास एवं कार्य के पुनरीक्षण एवं संशोधन के लिए निधियों की व्यवस्था करके औपचारिक शिक्षा में वानिकी पाठ्यक्रम के विकास तथा प्रमाणीकरण शामिल हैं। वर्तमान में जारी दो स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रमों (रोपण प्रौद्योगिकी, और लुगदी तथा कागज प्रौद्योगिकी) के अलावा दो एम०एस०सी० पाठ्यक्रम (वानिकी, और काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी) शुरू किए गए। उपर्यक्त चार पाठ्यक्रमों में, 1997-98 के दौरान 84 विद्यार्थियों को पंजीकृत किया गया। पाठ्यक्रमों के लिए नियुक्त चारों समन्वयक कार्य कर रहे हैं। अनुसंधान मानवशक्ति तैयार करने के लिए, वर्तमान में 122 कनिष्ठ अध्येता, 15 वरिष्ठ अध्येता और 21 अनुसंधान सहायक कार्यरत हैं। 22 अनुसंधान सहायक और 3 वरिष्ठ अध्येताओं का चयन किया गया है जो शीघ्र ही कार्य ग्रहण कर लेंगे।

विवरणाधीन वर्ष के दौरान सम विश्वविद्यालय, व०अ०सं० ने 22 व्यक्तियों को पीएच०डी० डिग्रियां प्रदान की।

वानिकी विस्तार

विमको के साथ एक औद्योगिक प्रौद्योगिकी प्रदर्शन प्रगति पर है। हैदराबाद में काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन (27 फरवरी - 1 मार्च, 98) और विभिन्न उपयोगकर्ता समूहों में व०अ०स० प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन 5 मार्च, 1998 को किया गया। विवरणाधीन वर्ष के दौरान विस्तार सहायता निधि के तहत रू 0.8 मिलियन के सात प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। विभिन्न तकनीकों पर 5 पम्फलेट/पुस्तिका और 4 तकनीकी बुलेटिन/ब्राशुअर्स प्रकाशित किए गए। विवरणाधीन अवधि के दौरान राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले और पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।

सात विषयों पर फिल्मों के निर्माण का काम स्क्रिप्ट लेखन, शूटिंग, सम्पादन एवं उत्पादन की विभिन्न अवस्थाओं में है। बंगलौर में 18-19 दिसम्बर, 1997 को चन्दन पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार और उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में 13-14 अक्टूबर, 1997 को नर्सरी तकनीकों के प्रदर्शन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

विश्व बैंक के मध्यावधि पुनरीक्षण मिशन द्वारा फ्री प्रोजक्ट मूल्यांकन

विश्व बैंक के मध्यावधि पुनरीक्षण मिशन द्वारा 28 मई, 1997 से 18 जून, 1997 तक संस्थानों के विभिन्न क्षेत्र स्थलों का दौरा करके भा०वा०अ०शि०पं० मुख्यालय और भा०वा०अ०शि०पं० संस्थानों में विभिन्न घटकों के तहत जारी परियोजनाओं की प्रगति का पुनरीक्षण किया गया।

क्षेत्रीय संस्थानों के कुछ घटकों, जैसे - रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम, राज्य वन विभागों से सिविल कार्य के लिए भूमि प्राप्त करने में देरी आदि, में प्रगति धीमी पाई गई। इसके अलावा, आई०एफ०आर०आई०एस०, आई०एफ०एल०आई०एन०, लाइब्रेरी नेटवर्किंग के विकास में भी समय - सारणी के अनुसार प्रगति नहीं थी।

तथापि, विश्व बैंक ने वचनबद्ध एवं समय-सारणी के साथ जुलाई, 97 से सितम्बर, 97 तक एक तीन महीने की कार्य योजना तैयार करने की सलाह दी। विश्व बैंक द्वारा तीन महीने की कार्य योजना की प्रगति का पुनरीक्षण नवम्बर, 97 में किया तथा सितम्बर, 97 तक अर्जित प्रगति पर सन्तोष व्यक्त किया।

विश्व बैंक पर्यवेक्षण मिशन 8 मार्च, 98 से 11 मार्च, 98 तक भा०वा०अ०शि०प० मुख्यालय, देहरादून में रहा और उसने वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार परियोजना की प्रगति का पुनरीक्षण किया।

संचालन समिति

वर्ष, 1994 में गठित संचालन समिति ने 1997-98 वर्ष की सालाना कार्य योजना के विपरीत नवम्बर, 97 में फ्रीप की प्रगति का पुनरीक्षण किया।

परियोजना 44: हिमालय पारि - पुनर्वास पर भा०वा०अ०शि०प० - आई०डी०आर०सी० अनुसंधान परियोजना ।

निम्न विशिष्ट उद्देश्यों एवं कार्यकलापों के साथ यह परियोजना अप्रैल, 93 में शुरू हुई, यह एक ही समय अनेक महत्वपूर्ण एवं अत्यधिक सम्बद्ध विषयों पर विचार करती है। इस परियोजना में शामिल देशों में भारत, नेपाल, चीन और भूटान हैं। यह तीन वर्षीय परियोजना थी किन्तु इसे मार्च, 1999 तक बढ़ाया गया। इसमें आई०डी०आर०सी० का योगदान 500,000 डालर सी ए डी तथा भा०वा०अ०शि०प० का योगदान 137,609 डालर सी ए डी और अवसंरचना सुविधाओं का है।

परियोजना के विशिष्ट उद्देश्य और कार्यकलाप निम्न हैं:

1. जी०आई०एस० तकनीकों का उपयोग करके झूम खेती, खनन, अन्य भूमि उपयोग प्रणाली के कारण हानियों का मूल्यांकन एवं परिणाम निर्धारित करना।
2. झूम खेती की रोकथाम के लिए उचित हस्तक्षेपों की पहचान व परीक्षण करना।
3. विशिष्ट तथा प्रतिरूप सूक्ष्म हस्तक्षेपों के साथ खनन से क्षतिग्रस्त क्षेत्रों का पुनर्स्थापन।
4. बेसलाइन और सामाजिक - आर्थिक संघात अध्ययन।
5. भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् की सामाजिक - आर्थिक एवं अन्त: विद्या विशेष अनुसंधान क्षमताओं को सुदृढ़ करना।
6. हिमालय के पुनर्वास पर विशेष ध्यान देते प्राकृतिक/क्षेत्रीय भूमि उपयोग नीति की समीक्षा तथा संस्तुति करना।

हिमालय के कुछ भागों में जी आई एस तकनीक द्वारा निम्नीकरण के विस्तार का मूल्यांकन, सहभागी देशों में नीति विषयों का पुनरीक्षण और अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक - आर्थिक प्रोफाइल को तैयार किया गया। खनित भूमियों विशेषकर हिमाचल प्रदेश में अध्ययनों को उच्च प्राथमिकता दी गई। मसूरी के खान प्रभावित लघुतम - जलसंभर में पुनर्स्थापन एवं एकीकृत विकास तथा सतत प्रबन्धन परियोजनाओं के लिए सामाजिक - आर्थिक रूप से जीवनक्षम प्रौद्योगिकी पैकेजों का परीक्षण किया गया।

परियोजना 5: "निम्नीकृत भूमियों के लिए बांस कृषि वानिकी प्रौद्योगिकी" पर आई०डी०आर०सी० - आई०एन०बी०ए० आर० परियोजना।

निम्नीकृत कृषि भूमि पर बांस की खेती के लिए उपर्युक्त कृषि-वानिकी मॉडलों की स्थापना हेतु एक आई०डी०आर०सी० (आई०एन०बी०ए०आर०) निधीयित परियोजना 1 जनवरी, 1995 से मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में चल रही है। इस परियोजना में मृदा और जल संरक्षण उपायों के साथ निम्नीकृत कृषि भूमियों के सतत उत्पादक उपयोग को बढ़ाने के लिए अनुसंधान एवं विकास के एक व्यापक कार्यक्रम पर विचार किया गया है।

परियोजना के विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं:

1. क्षेत्र में उपयोग के लिए उपर्यक्त बांस कृषि वानिकी मॉडलों का विकास करना।
2. प्राप्त अनुसंधान परिणामों की पारिस्थितिकीय/सामाजिक - आर्थिक जीवन - क्षमता एवं स्वीकार्यता का निर्धारण करना।
3. उपर्युक्त अध्ययन के संम्बन्ध में क्षेत्र के सहयोगी अनुसंधान कार्यकलापों को सुदृढ़ करना।

वर्ष के दौरान सिंचाई, निराई और मिट्टी के टीले बनाकर तेजी से बढ़ने वाले बांसों के रख रखाव के अलावा रबी और खरीफ दोनों में बीच में कृषि फसलें लगाना प्रमुख कार्यकलाप थे। मृदा नमूने एकत्र करके विभिन्न गुणों के लिए विश्लेषण किया गया। बांसों की जड़ों और मृदा बीजाणुओं पर बी ए एम में संक्रमण का भी अध्ययन और विश्लेषण किया गया। बांस - नाइगर, बांस - सोयाबीन, बांस - सरसों, बांस - गेहूं, बांस - उड़द और बांस - अरहर मॉडलों का विकास किया गया। पारिस्थितिकीय एवं सामाजिक - आर्थिक अवस्थाओं पर इन मॉडलों के संघात के मूल्यांकन पर प्रमुख जोर दिया गया।

इन मॉडलों ने स्थानीय किसानों, बांसोडों (बांस शिल्पी) और आम लोगों को आकर्षित किया। विकसित प्रौद्योगिकी की, निम्नीकृत कृषि भूमियों पर बांस कृषिवानिकी प्रणाली को बड़े पैमाने पर अपनाने के लिए, भूस्वामियों द्वारा प्रशंन्सा की गई।

परियोजना 6: उत्तर - पश्चिम हिमालय के कुछ दुर्लभ औषधीय पादपों के सर्वेक्षण, खेती एवं विस्तार पर आई०डी०आर०सी० परियोजना।

आई०डी०आर०सी० निधीयित यह परियोजना नवम्बर, 95 में शुरू हुई, जिसमें उत्तर - पश्चिम हिमालयों के कुछ महत्वपूर्ण पादप स्रोतों, यथा - टैक्सस बकाटा, नार्डस्टिकी जटामांसी, पिक्राराइजा कुराय और कॉलचिकम ल्यूटीयम के सर्वेक्षण, पर - स्थाने संरक्षण के लिए इनके जननद्रव्य संग्रहण, खेती और उद्गम स्थल परीक्षण तथा उपर्युक्त विस्तार पैकेजों के विकास पर विचार किया गया है।

परियोजना के विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार थे :

(क) उत्तर-पश्चिम हिमालय क्षेत्र में पहचान की गई प्रजातियों का, उनके प्राकृतिक प्राप्तिस्थान एवं वितरण के लिए, सर्वेक्षण करना।

(ख) जननद्रव्य संग्रहण और व०अ०सं० अनुसंधान स्टेशन, मसूरी क्षेत्र में जीन पूलों की स्थापना।

(ग) परियोजना प्रजातियों के खेती परीक्षण।

(घ) मसूरी क्षेत्र, देहरादून में प्रदर्शन भूखण्ड/नर्सरी की स्थापना करना।

(ड०) सर्वोत्तम वर्धमान एवं सक्रिय तत्व समृद्ध उद्गमस्थल की पहचान के लिए जांच करना।

इस परियोजना के अन्तर्गत, उत्तर प्रदेश के गढ़वाल क्षेत्र में टैक्सस बकाटा, पिक्रोराइजा कुराया और नार्डोस्टेकी जटामांसी के प्राकृतिक प्राप्तिस्थल के लिए सर्वेक्षण किया गया। उत्तर प्रदेश के गढ़वाल क्षेत्र और जम्मू व काश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश के कुछ स्थानों में जननद्रव्य का संग्रहण किया गया। साथ ही साथ प्रयोगशाला में नार्डोस्टेकी जटामांसी और पिक्राराइजा कुराया के प्रवर्धन परीक्षण भी किए गए। गढ़वाल पहाड़ियों से पिक्रोराइजा कुराया और नार्डोस्टेकी जटामांसी से कुटकिन और सुरभित तेल का निष्कर्षण भी किया गया।

परियोजना 7: अन्तर्राष्ट्रीय नीम नेटवर्क परियोजना।

ऐजैडिरैक्टा इंडिका ए०जस पर यह परियोजना 1993 में शुरू हुई। यह भारत सहित विश्व के 17 नीम उत्पादक देशों में क्रियान्वित की जा रही है। इस परियोजना का समन्वयन एफ०ए०ओ० द्वारा सी०आई०आर०ए०डी० - फॉरेस्ट (फ्रांस), डी ए एन आई डी ए वन बीज केन्द्र (डी ई एस सी, डेनमार्क), वन/ईधनकाष्ठ अनुसंधान एवं विकास परियोना (एफ/एफ आर ई डी, बेंगकॉक) के सहयोग से किया जा रहा है। भारत में, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर और वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजजन संस्थान, कोयम्बटूर द्वारा परियोजना के तहत 1996 में अन्तर्राष्ट्रीय नीम उद्गमस्थल परीक्षण तैयार किए गए।

जुलाई - अगस्त, 1997 के दौरान, अन्तर्राष्ट्रीय नीम नेटवर्क देशों की एक कार्यशाला यांगोन, म्यांमार में आयोजित की गई थी। भा०वा०अ०शि०प० के दल ने भारत में अन्तर्राष्ट्रीय नीम उद्गम स्थल परीक्षणों पर एक स्टेटस रिपोर्ट प्रस्तुत की। यह कार्यशाला एक मील का पत्थर सिद्ध हुई क्योंकि इसने परीक्षणों के मूल्यांकन एवं विश्लेषण के लिए दिशानिर्देशों को अन्तिम रूप दिया और अपनाया। वास्तव में, भा०वा०अ०शि०प० के वैज्ञानिकों ने इन अन्तर्राष्ट्रीय दिशानिर्देशों को तैयार करने में अहम भूमिका निभाई। पुनरीक्षण वर्ष के दौरान परीक्षणों की सूचना के अभिलेखन एवं विश्लेषण के लिए तीन भा०वा०अ०शि०प० संस्थानों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय रूप से गृहीत दिशानिर्देश एवं प्रतिवेदन फार्मेटों का उपयोग किया।

परियोजना 8: भारत में देशज पॉपलरों का संरक्षण (टी ओ/94/02/टी)

देशज पॉपलरों के संरक्षण पर एक ए०ओ० निधीयित यह परियोजना हिमाचल प्रदेश उत्तर प्रदेश और पूर्वी हिमालय क्षेत्रों को सम्मिलित करती है। परियोजना का मुख्य उद्देश्य भावी संरक्षण, प्रजनन एवं सुधार कार्यक्रमों के लिए एक आधार के रूप में भारत के देशज पॉपलरों, यथा - पॉप्यूलस सिलिएटा, पॉप्यूलस एल्बा, पॉप्यूलस यूफ्रेटिका और पॉप्यूलस गैम्बली का उनके सम्पूर्ण प्राप्ति स्थलों में संरक्षण करना है।

विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं:

(क) प्रजाति का सर्वेक्षण करना।

(ख) लक्ष्य प्रजातियों का, उनके स्तर के सर्वेक्षण के आधार पर, संरक्षण करने के लिए रणनीतियों एवं प्राथमिकताओं का विकास करना।

परियोजना के उद्देश्यों का पूरा करने के लिए वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून को उ०प्र० में हिमालय क्षेत्रों; हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला को हिमाचल प्रदेश में हिमालय क्षेत्रों और वर्षा एवं नम पर्णपाती वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट को पूर्वी हिमालय में पॉपलर क्षेत्रों को शामिल करने का कार्य सौंपा गया है।

अरूणाचल प्रदेश में पॉप्युलस सिलिएटा और पॉप्यूलस गैम्बली के प्राप्ति स्थल पर व्यापक सर्वेक्षण किया गया। हेपोली वन प्रभाग, लोवर सुबांसारी जिला, लोहित वन प्रभाग तथा येचूली वन रेंज में चार कम्पार्टमेंटों के साथ दो ब्लॉक में पाए जाने वाले पॉप्यूलस गैम्बली के संम्बध में भी सर्वेक्षण किया गया। येचूली वन रेंज (ब्लाक: एम ए आई न्यूक) के अन्तर्गत क्षेत्रों में स्कीमा वालिची, एलनस नीपेलेन्सिस, माइकेलिया प्रजाति, ऐल्बिजिया प्रजाति, कालिकार्पा आर्बोरीया, क्वेर्कस प्रजातियों एवं सिनामोमम जैसी प्रजातियों के साथ पॉप्यूलस गैम्बली अच्छी तरह स्थापित होती है। पॉप्यूलस सिलिएटा को मुख्य रूप से पहाड़ियों के बीच नालों के चारों ओर उगा देखा गया। शामिल किए गए क्षेत्रों में पश्चिम कामांग और ट्वांग जिले, सेरा बामडिला, जंग, थिंग्रिनाला, धिरांग, जमटांग और रूपा आदि हैं, जहां पॉप्यूलस सिलिएटा अन्य प्रजातियों जैसे - एलनस नीपेलेन्सिस, रोडोडेन्ड्रान, ओक, प्रूनस प्रजाति, इलिसियम ग्रिफिथी, बांस, सेलिक्स प्रजाति, के साथ विशुद्ध वन खड़ों में पाया जाता है। मई - जून, 1998 के दौरान, उ०प्र० पहाड़ियों में उत्तरकाशी वन प्रभाग, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा और नैनीताल वन प्रभाग के क्षेत्रों में सर्वेक्षण किया गया। इस कार्यकलाप को पाँच साल और चलाने के लिए एक प्रस्ताव तैयार किया जा रहा है।

परियोजना 9: लोगों की हिस्सेदारी के लिए उत्पादकता वृद्धि - प्रबन्धन पर भा०वा०अ०शि०प० - फोर्ड फाउन्डेशन परियोजना।

फोर्ड फाउन्डेशन की सहायता से लोगों की हिस्सेदारी के लिए उत्पादकता वृद्धि - प्रबन्धन पर परियोजना 1995 में शुरू की गई। परियोजना की अवधि चार साल हैं। परियोजना के लिए कुल सहायता 2,00,000 अमरीकी डालर है। मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं।

1. सामाजिक रूप से स्वीकार्य और आर्थिक रूप से जीवनक्षम प्रौद्योगिकी के विकास के लिए लोगों की अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अभिलेखन के लिए सामाजिक - आर्थिक सर्वेक्षण करना।

2. वन समुदाय हिस्सेदारी आकर्षित करने तथा स्थानीय मांगों को पूरा करने हेतु सेवाओं एवं सामानों का उत्पादन बढ़ाने के लिए पुनर्स्थापन/वन पुनर्जनन के स्थल विशेष मॉडलों का विकास करना।

(क) मध्य भारत के शुष्क साल वन।

(ख) मध्य भारत के शुष्क पर्णपाती सागौन वन।

(ग) उत्तर भारत में निचली पहाड़ियों के शुष्क पर्णपाती मिश्रित वन।

परियोजना का क्रियान्वयन उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर तथा वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा किया जा रहा है। अध्ययन के लिए पहचान किए गए तीन स्थल क्रमशः मध्य प्रदेश में जबलपुर, उड़ीसा में सम्बलपुर तथा हरियाणा में यमुनानगर में हैं। सहभागी ग्रामीण आंकलन (पी०आर०ए०) और त्वरित ग्रामीण आंकलन (आर०आर०ए०) तकनीकों का उपयोग करके परियोजना के अन्तर्गत पहचान किए गए गाँवों के सामाजिक - आर्थिक अध्ययन पूरे किए गए।

मध्य प्रदेश स्थल : सभी चयनित गाँवों में, सहभागी ग्रामीण आंकलन तकनीक द्वारा सामाजिक - आर्थिक तथा जनसांख्यिकीय सर्वेक्षण किया गया। सामाजिक - आर्थिक एवं जनसांख्यिकी सर्वेक्षणों के परिणामों को संकलित तथा विश्लेषत किया गया। घेरा श्रेणी और छत्र छेत्रफल पर आधारित चार यथा बुकानेनिया लैंजेन के बीजों और फलों तथा मधुका लांगिफोलिया फूलों की स्थानीय उत्पाद सारणियों का प्रतिपादन प्रगति पर है। चिह्नित महुवा और चार वृक्षों से उत्पाद आँकड़ों को संकलित किया गया। वानस्पतिक सर्वेक्षण के दौरान एकत्रित आँकड़ों को विश्लेषित करके आपेक्षित घनत्व, बारम्बारता, प्रभाविता आदि की गणना की गई।

उड़ीसा स्थल : राधियापाली गांव का सहभागी ग्रामीण आंकलन दुबारा करके पुनरीक्षण किया गया। परियोजना दल ने नए चयनित गांव कुंजापाली का नवीन सहभागी ग्रामीण आंकलन किया। पांच गाँवों, यथा - राधियापाली, कुंजापाली, गड़गड़ाभाल, कृष्णा नगर और धीकून्डी, के वनस्पति अध्ययन पूरे किए गए। दोनों गाँवों में जुलाई, 1997 में सहायक कार्यकलाप के रूप में मशरूम खेती के प्रदर्शन एवं विस्तार का काम शुरू किया गया। कुंजापाली गांव में खेती का काम चल रहा है तथा उत्पादन और व्यय के ब्योरों को नियमित रूप से अभिलिखित किया जा रहा है। वर्ष 1996 और 1997 के दौरान, ग्रामीणों को उनकी अपनी वासभूमि भूखण्डों एवं खेतों में बहु उद्देशीय वृक्ष प्रजातियों के बीजों/पौधों को लगाने के लिए प्रेरित किया गया ताकि वे सतत आधार पर चारा और ईधन काष्ठ प्राप्त कर सकें।

हरियाणा स्थल: परियोजना यमुनानगर, हरियाणा में क्रियान्वित की जा रही है। यह "उत्तर भारत में निचली पहाड़ियों के शुष्क पर्णपाती मिश्रित वन" के एक सादृश्य क्षेत्र के रूप में है। परियोजना के तहत अध्ययन क्षेत्र यमुनानगर वन प्रभाग के छिछरोली और सिधौरा रेंज एवं इसके समीप पांच गाँवों के अधीन वन हैं। सहभागी ग्रामीण आंकलन, सामाजिक मानचित्रण तथा अन्य सम्बन्धित तकनीकों द्वारा सामाजिक - आर्थिक सर्वेक्षण किए गए। घासों तथा औषधीय पादपों सहित प्रकाष्ठ और गैर - प्रकाष्ठ वन उत्पादों का सर्वेक्षण एवं पहचान भी की गई।